30

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-88421-07-2

दाम : ₹50/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 30
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

माघक घूर : 2

अखन अदहो अगहन नइ बीतल, दिसम्बरक तँ छुतियो ने भेल अछि, नवम्बर अन्तिम सीमापर जरूर पहुँच गेल अछि। मुदा शीतलहरीक कहर शुरू भऽ गेल। ओना, बेरुका समय छल, माने दिनक बेरुका, मुदा सुर्ज नइ उगने भिनसरे जकाँ बुझि पड़इ।

चद्दैर ओढ़ि गणेशी काका दरबज्जापर बैसल अपन माघक घूरक हिसाब-बारी जोड़ि रहल छैथ। जोड़ि रहल छैथ जे ओना, कातिकेसँ घूर करै छी, कातिके किए जखन माल-जाल पोसने छी तखन तँ बारहो मास करिते छी। जड़ैया घूर ने जाड़क मास होइए, जइसँ जाड़केँ भगौल जाइए, मुदा मच्छरो भगबैले तँ घूरक खगता मालक थैरोमे होइते अछि।

खाएर जे अछि मुदा घूरो तँ घूर छी, मच्छर भगबैबला, जाड़ भगबैबला आ कनकनाइत ठाढ़केँ भगबैबला इत्यादि, घूरोमे अन्तर तँ होइते अछि।

जाड़े देह सिहरैत रहए, तँए तमाकुल खाइक मन भेल। ओना, अपन चुनौटीक तमाकुल सठि गेल छल से जलखैये बेरसँ बुझल छल, मुदा रौदक आशामे दोकान नइ गेल छेलौं।

गणेशी कक्काक घर लगेमे छैन, बिनु मंगनौं वा कहनौं, जखने

ओइठाम जाइ छी तखने पहिने तमाकुलेक आग्रह होइए। तँए बिनु मंगनौं तमाकुल भेटैक आशा अछिए।

गणेशी काका ऐठाम विदा भेलौं। मनमे खुशी रहबे करए जे दोसरसँ बिनु मंगनौं कोनो उपयोगी वस्तु भेट जाए, तँ ओ उपकारे भेल। मुदा ऐठाम तँ उपकार नहि उचित छी। हमरो समय जाएत।

दरबज्जापर बैसल गणेशी काका आँखि मुनने चद्दैरसँ नाक तक झँपने किछु सोचि रहल छला। आँखि बन्न आ नाक झाँपल देख मनमे शंका उठल जे गणेशी काका भरिसक नीनाएल छैथ। बैसलो-बैसल तँ लोक एक झपकी लाइये लइए। मनमे भेल जे जखन नीनक आनन्दमे काका डुमल छैथ, तखन आनन्द भंग करब नीक नहि। ओना, अपनो मन तमाकुल लेल छिछियाइते रहए जे कखन मुँहमे औत। नबे-दस बजेसँ तमाकुल नइ खेने छेलौं। कहुना तँ अखन तीन बजैत हएत। मुदा से भेल नहि, पैरक अवाजसँ आकि बाहरी धमक बुझि गणेशी काका आँखि खोललैन। जगले छला। अपन माघक घूरक हिसाब जोड़ि रहल छला। ओना, गाममे बहुत गोरे एहेन छैथ जे श्रेष्ठजनक बीच सिर नइ लिबौन करै छैथ, मुदा अपना से नहि अछि। मेडिकलक विद्यार्थी जकाँ जँ दिनमे सैयो बेर आगू पड़ता तँ सैयो बेर सिर लिबैबते छी।

..नजैर पड़िते गणेशी काका बजला-

"की हाल बौआ?"

हमरो सुतरल। सुतरल ई जे एकटा हाल बेकती वा परिवारक होइए, दोसर प्राकृतिक होइए जे निच्चाँ-ऊपर एकबट्ट केने रहैए, तेहने समय अछि, तैबीच फुटौल केना जाएत? बजलौं-

"काका, जे गति अपन सएह ने अनको रहत।"

हमर बात सुनिते एकमुहरी गणेशी काका मानि बजला-

"हँ, ई तँ ठीके कहलह मुदा... ।"

काकाकेँ खाली ऊपरके पीढ़ी नइ बुझै छिऐन, समैयक समझदार सेहो बुझै छिऐन। तेकर कारणो अछि जे कोनो विचार-विनिमय काका हूसऽ नइ दइ छैथ। जखन किछु बुझए चाहै छी आ काका लग बजै छी तँ ओ आगू-पाछूक चौमेड़ बान्हि बीचक स्थिति बुझबैत विचार जनु दइ छैथ। तँए मनमे शंका भेल जे अपनासँ ऊपरक कोनो विचार पेटमे छैन तँए अदहे कहि चुप भऽ गेला। पुछलयैन-

"से की काका?"

प्रशान्त चित्तसँ काका बजला-

"गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइए, तहूमे तेहेन समय भऽ गेल अछि जे लोक तमाकुल-चाह-पान करैत रहह आ गप-सप्पकेँ लाड़ैत-चाड़ैत रहह। मुदा गपो कि अदना-गोदना छी, एकरो सम्हार लेल पहिने अपनो सम्हरए पड़ै छइ।"

गणेशी कक्काक बात सुनि मन विससँ विसाइन भऽ गेल। विसाइन ई भेल जे जे बात बुझैले बजलौं से तर पड़ि गेल आ दोसर विस आबि मनकेँ घेर लेलक। मुदा जहिना सुनटा गिनती होइए, तहिना ने उनटो होइए। जइसँ छुछुनैरक बीख उतारल जाइए। पहिने पैछले बात बुझि लेब पछाइत ऐगला चर्च करब। मन थीर भेल। बजलौं-

"हँ, से तँ ठीके।"

हमरा गपक सह जेना काकाकेँ भेटलैन तहिना बजला-

"पहिने तमाकुल खाह, पछाइत गप-सप्प करब।"

जे तमाकुल मुँहमे गेने फुरफुरा कऽ उठैए, ओ तमाकुल मुहसँ बाहरो हाथोमे एने तँ करामात करिते अछि। मन अपनो तरपल, मुदा देहक खगता हौउ आकि मनक अनके जकाँ अपनो विचार उठल। बजलौं-

"काका, चुनौटी दिअ बढ़ियासँ बनबै छी।"

सएह भेल। हाथपर औंठाक मर्दन पबिते जेना मन खुरखुरए लगल। बजलौं-

"ऐ बेरक समय तँ देखै-जोकर भऽ गेल।"

अपन मन ने तमाकुलक पाछू छिछियाइत रहए, मुदा कक्काक मन तँ से नइ रहैन, बाजए लगला-

"बौआ, देखैसँ पहिने बुझऽ-सुझऽ पड़तह। समैयोक अपन इतिहास अछि। एक इतिहास अछि दिन, महिना, सालक आ दोसर अछि अनहोनीक।"

बिच्चेमे बजलौं-

"अनहोनी की भेल?"

हमर बात सुनि गणेशी कक्काक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे प्रश्न-पर-प्रश्न उठल जाइए, समय अछि तमाकुले खाइ भरिक, किए तँ काज काजकेँ जहिना रोकैए तहिना प्रश्नो ने प्रश्नकेँ रोकैए। विचारकेँ समटैत काका बजला-

"जे कहियो काल होइए, वएह भेल अनहोनी।"

अपनो बुझि पड़ल जे काका संक्षेपमे अपन विचार सम्पन्न करए चाहै छैथ। मुदा बिच्चेमे बजा गेल-

"काका, बड़ जुलुम भेल!"

'जुलुम' सुनिते काका आँखि ठाढ़ करैत बजला-

"से की?"

बजलौं-

"फकीरबा भैया जे मुइला, तइ जरबैले जे बेवस्था हुअ लगल तइमे अनगौंआँ सभ आबि कऽ नाश कऽ देलकैन!"

काका बजला-

“की नाश केलकैन?”

“एकेटा आमक गाछ फकीरबा भैयाक परिवारमे छेलैन जेकरा काटि कऽ नाश कए देलकैन।”

काका बजला-

“एना किए भेल?”

बजलौं-

“काका, एकरा दुरविचारे काटब नइ कहबै, बाहरक कुटुम समाचार सुनि धड़फड़ाएल एलैन आ घरवारीकेँ पुछलकैन जे लकड़ी केतए अछि। घरवारी गाछ देखा देलकैन। गाछकेँ देखते घरवारीसँ कुड़हैर लऽ जा कऽ काटि देलक। तैबीच जरबैले समाजक लोक ऐ दुआरे नइ पहुँचल छला जे जानकारीमे छेलैन जे जिज्ञासु कुटुम सभकेँ अबैमे अखन देरी अछि। तैबीच एहेन गलती भऽ गेल।”

गणेशी काका-

“मुरदा जरौल केना गेल?”

तैबीच दू झाड़ैन, माने धान दौनक खोह जकाँ, तमाकुलमे दऽ देने छेलिऐ, तेसर पछुआएल छल मुदा लगिचाएले छल। हाँइ-हाँइ कऽ चून झाड़ि थोपड़ी देलौं। थोपड़ी देख गणेशियो काका तमाकुलक आशामे मुँह बन्न केने रहला आ अपन मन तँ पहिनहिसँ से चटपटाएल छल।

मुँहमे तमाकुल लइते बजलौं-

“काका, कोनो कि अपनेटा गाममे लोक मरै छैथ आ जरौल जाइ छैथ, ई तँ गाम-गामक लीला छी।”

थूक फेकैत गणेशी काका बजला-

“हँ, से तँ छीहे।”

गणेशी कक्काक विचारक सह पबिते बजलौं-

“जँ जइ गाममे जिनका छैन ओ कियो सरड़, चानन, घीसँ जरबै छैथ, आ जिनका नै छैन ओ ओहिना खढ़क ऊक मुँहमे लगा माटिमे गाड़ि दइ छैथ। वा धार-धूरमे फेंक दइ छैथ।”

मुड़ी डोलबैत गणेशी काका बजला-

“हँ, से तँ होइते अछि, जेकरा जे विभव रहल तइ हिसाबे काज करैए।”

मुँहमे तमाकुल फुला गेल छल, तँए बजैले मन लुसफुसाइते छल। बजलौं-

“काका, कियो काँच-सुखल लकड़ीसँ जरबै छैथ तँ कियो सोल्हैनी काँचे वा सुखलेसँ। मुदा अपना ऐठाम गाछी-बिरछी उपटने वा नइ रहने, मुरदा नइ जरौल जाइए सेहो तँ नहियेँ अछि। गोरहो-गोइठासँ तँ जरौल जाइते अछि।”

पैछला बातकेँ पकैड़ गणेशी काका बजला-

“तखन भेल की?”

बजलौं-

“भेल की, समय तँ देखते छिऐ जे कइ हिसाबक भऽ गेल अछि। तीन बजे मुरदा घाटपर पहुँचल। रौदक केतौ दरस नहि, तैपर सँ झीसी जकाँ पाला खसैत। लकड़ीसँ मुरदा जरबैमे तीन-चारि घन्टा लगिये जाइए। किएक तँ लकड़ी ने काटल अछि, मुदा ओकरा बिना चीरने-फारने थोड़े जरौल जाएत। चीरैत-फारैत अछिया सजबैत घन्टासँ बेसीए लगि जाएत। पछाइत ने संस्कार पड़ैत। संस्कार पड़ला पछाइत सवा पहर जरबैमे लगिते अछि।”

मुड़ी डोलबैत गणेशी काका बजला-

“हँ, से तँ सभ दिनसँ होइत आएल अछि। मुदा भेल की?”

बजलौं-

“बरियातियो सभ होशियारी केलैन। घरवारीकेँ कहलखिन जे एक गोरेक संग सभ नइ ने मरि जाएब। तीन-चारि घन्टा ठण्ढमे बितौला पछाइत पोखैरमे नहाएब, ई तँ जानि कऽ जान जोखिममे देब हएत किने। डेढ़ साए गोरहाक ओरियान भेल। लगले अछिया खुनि गोरहाक संग लहास सजा, संस्कार पड़ल। घन्टे भरिमे सभ काज समापन भऽ गेल।”

गणेशी काका मने-मन अँटकार लगौलैन जे जे लकड़ी कटि गेल ओ तँ फेंकैये जाएत तइसँ नीक ने ओकरा आनि अपन माघक घूरक ओरियान कऽ लेब।

दोसर दिन भोरे गणेशी काका जारैन टोहियबैत घाटपर पहुँचला। लहास छाउर भेल अछियामे, बगलमे लकड़ी पड़ल...। हियासि कऽ देख घरवारीकेँ आबि पुछलखिन-

“लकड़ी अनेरे फेंकब नीक नहि, तँए जँ ओकरा आनि कऽ भोज-काजमे लगा लेब ओ नीक हएत किने? आ नहि जँ फेंकब तँ हमहीं ओकरा लऽ जा कऽ घूरक ओरियान कऽ लेब?”

किछु छी तँ सम्पैत छी किने, केकरा ने लोभ होइए। घरवारी कहलकैन-

“अपने उठा कऽ लकड़ी लऽ आनब। तखन जँ अहाँ मुँह छोड़लौं तँ एक मासक घूरमे जेतेक खर्च हएत तेते लऽ लेब।”

घरवारीक बात सुनि गणेशी कक्काक मन खुशी भऽ गेलैन। ओना, अपनो गाछ-बिरीछ छैन, मुदा जे जीवित छैन, ओ तँ भविसोक लेल छैन्हे। मुदा जे कटि गेल ओ तँ पुन: ठाढ़ भऽ जीवित नइ हएत...।

आँगन आबि कुड़हैर, टेंगारी, नेने लकड़ी लग पहुँचला। टेंगारी-कुड़हैर हाथमे देख छह बर्खक पोता सेहो पाछू-पाछू दौड़ल गेलैन।

लकड़ी लग पहुँच टेंगारी-कुड़हैर राखि गणेशी काका पोताकेँ पहिने

अछिया देखेलखिन।

अछिया देख पोता पुछलकैन-

“ई की छिऐ?”

बजला-

“फकीर भैया जे मरला से अहीमे जरि कऽ छाउर भेल छैथ। एहने रीत संसारक अछि।”

पोता पुछलकैन-

“सभकेँ अहिना होइ छै?”

गणेशी काका बजला-

“कहैले तँ सभकेँ अहिना होइ छै मुदा... ।”

लगाड़ी पोता छैन्हे। बाबाक संग लगपन छइहे। तहूमे लगमे बेसी काल रहने गणेशी कक्काक नाड़ी सेहो पकड़नहि रहै छैन। नाड़ी पकड़ब भेल जिद्द रोपि अपन पक्षमे आनब। ओना, बाल-बोधक जिद्दकेँ गणेशी काका अवोध जिद्द बुझै छैथ, जेकरा खिच्चो कहले जा सकैए। ओना, ओइमे खच्चाक संभावना सेहो रहै छै, तँए नाड़ी पकड़बकेँ गणेशी काका सोल्हैनी अधला नहियेँ बुझै छैथ। किए तँ ‘कहब’ एक भेल, दोसर भेल ‘सुनब’ आ तेसर ने भेल ‘करब’, तँए तीनूमे अन्तरो अछिए। ‘सुनब’सँ भारी ‘कहब’ भेल आ तहूसँ केते नमहर भारी करब होइते अछि। तँए पाशाकेँ आगू बढ़बैत गणेशी काका कुड़हैर उठा लकड़ी फाड़ए लगला। अपन बात बिसैर पोतो टेंगरी उठा डारिपर पटकए लगल।

तही बीच गणेशी कक्काक पुतोहुकेँ कियो कहि देलकैन जे बेटा मरचरमे अछि।

सुनिते बीढ़नी जकाँ भनभनाइत पुतोहु लगमे पहुँच बेटाकेँ कोरामे उठा ससुरपर अकची-दोकची सेहो भनभनाइते आँगन दिस बढ़ली।

गणेशी कक्काक मनमे भेलैन जे झूठ-फूसमे तेहेन रगड़ी छैथ जे बच्चाकेँ अखन जान लेती।

..पाछू-पाछू सभ बात सुनैत कानमे ठेकी लगौने गणेशी काका पोता लग पहुँच मुँह खोलला-

"बच्चाकेँ किए जान लइपर तूलल छी। आँखिमे गेजर भेल अछि जे एते ठण्ढामे बच्चाकेँ नहाएब।"

ओना, पुतोहुक तामस अखनो धरि नहि कमल छेलैन, ओहिना छेलैन। मुदा तामस रोकैक उपायो तँ अछिए। ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे टस-मस होइबला नइ अछि। ओ तँ निर्भर करैत अछि जगहपर। खाएर जे से..। तैबीच उल्टा उत्तर दैत माने उनटबैत पुतोहु कहलकैन-

"ई जान लइ छेलखिन से बड़बढ़ियाँ आ हम बड़ अधला?"

गणेशी काका मने-मन पुतोहुकेँ बराबरीक बात सुनि क्षुब्ध भऽ गेला। मनमे उठलैन- लोकाचार की छी। कोन समाजमे केहेन लोकाचार निरमित होइए आ विलीन होइए, से थोड़े बुझै छैथ। कहनौंपर मानबे केते करती। मुदा जँ जवाबसँ नहि रोकब तँ बच्चाक जान लइये कऽ छोड़ती। बजला-

"बच्चाक सौंसे देहमे केतौ जान लेब देखा दिअ ते। मुदा अहाँ जे माथपर पानि ढारबै से अपन आँखि नइ देखैए। बड़ मन जरल अछि ते एक बून गंगाजल माथपर दए दियौ।"

गपो-सप्पक क्रम आ कलक चबुतरोक ठण्ढपन पुतोहुक मनकेँ जेना ठण्ढ बनबए लगलैन। बजली-

"गंगाजल घरमे नइ अछि।"

'अभाव' सुनिते गणेशी काकाकेँ भाव जगलैन। बजला-

"गंगाजलोक कमी अछि। कलक पानि की छिऐ। गंगो महरानीक पानि पीब लोक अपन धरम-करमसँ जीबैए आ कलोक पानि पीब तँ जीविते अछि। हाथसँ लकड़ी छुलक तँ ओतबे दूर ने छुआएब भेलै, तँए दुनू हाथ धोइ दियौ। हम जाइ छी- लकड़ी चीरैले। अपन बेटाकेँ पकैड़ कऽ घूर लग राखब। बड़ी-कालसँ ठण्ढमे वौआएल अछि।"

गणेशी कक्काक विचार सुनि पुतोहु पुताउ बनि गेलैन, तँए बजली किछु ने मुदा मन गवाही देलकैन जे बेटाधन छी, जँ अपने बेटी बनि नहि चलब तँ बेटा थोड़े बेटा बनि पौत?

❑ **साभार : बीरांगना**

चहकल विचार

कािल्हये वरस्पैत काका हाइ स्कूलसँ सेवा निवृत्त भेला अछि। जिनगी भरिक नोकरीक भारसँ निवृत्त होइसँ पहिने मनमे खूब खुशी छेलैन जे बेटो-पुतोहु ठौर लगि कऽ जगरनाथेपुरीमे रहैए आ बेटियो सभ ठौरेपर अछि। जइ समयमे नोकरी शुरू केने रही तइ समयमे जेते मास दिन खटलापर दरमाहा भेटै छल तइसँ चारि गुणा बेसी (नव वेतनमान बनने) आब पेंशने भेटत। जहिना अखन धरिक जिनगीमे केकरो रोब-दाब नइ सहलौं तहिना भगवान आगूओ जिनगीक पार लगेबे करता।

हाइ स्कूलक शिक्षणमे जिनगीक पैंतीसम बर्ख बीता वरस्पैत काका सेवा निवृत्त भेल छला। नीतिशास्त्रक विद्यार्थीसँ जे जिनगी शुरू केलैन ओ साठि बर्खक जिनगीक सीमानपर पहुँचा देलकैन। अखन धरि जइ घर-अँगनामे रहै छला ओ अस्थायी रूपे, मुदा आब स्थायी रूपे रहता, तँए दुनू परानीक ऐगला जिनगीक पहिल काज यएह स्थायित्व आनब छेलैन।

तीन बजे भोरे नीन टुटिते वरस्पैत कक्काक मनमे एलैन जे अखन धरि दुनू परानीक बीच बिनु ठौर-ठेकानक जिनगी छल। कहियो गाए-महींस गनैक ड्यूटी करै छेलौं, तँ कहियो भोँटक बूथपर सवा किलो मिठाइ महावीरजी कैँ कबुल, जाइ छेलौं। तहिना पत्नियोँक छेलैन। ओना, बापक घरमे जीबैक सभ लूरि सीख नेने छेली। तेकर कारण छल

जे पिता सदिकाल चरिया-चरिया कहैत रहै छेलैन जे अपन जिनगीक काज हर मनुखकेँ चीनहक चाही। हाथ-पएर सभकेँ छइहे, जखने ओकरा ओइ काजकेँ पकड़ैक लूरि भऽ जेतै तखने ढलानपर ढलकैत गाड़ी जकाँ जिनगी असानीसँ चलए लगत।

ओना, वरस्पैत कक्काक संग भेला पछाइत सुगिया काकी किसान परिवारक कन्याँसँ नोकरिहारा परिवारक कनियाँ बनि गेल छेली। तँए क्रियामे जहिना सभकेँ होइ छै तहिना सुगियो काकीकेँ भेले रहैन।

तीन बजे भोरे वरस्पैत काकाकेँ नीन टुटिते पत्नीकेँ जगबैक विचारसँ बजला-

"पैछला चालि-ढालि छोड़ू, एते दिन दोसरक हाथमे छेलौं तँए दोसर जिनगी छल, आइसँ स्वतंत्र भेलौं। तँए जिनगीक चालि-ढालि सेहो ने तोड़ए-जोड़ए पडत। तहूमे जखन हम केतौ आ अहाँ केतौ चिड़ै जकाँ छेलौं तखुनका आ आब एक्के घर-दुआरिमे दिन-राति मनुख जकाँ रहब, से तँ अपने ने विचार करैत चलब।"

ओना, सुगिया काकीक नीन सेहो टुटले छेलैन, मुदा चुपचाप अपन बुढ़ाड़ीक जिनगीक हिसाब लगबै छेली जे आब केतबो सींग कटा नेरू बनब से पार लागत। तहूमे दुनू परानी एक उमेरिये छी तँए रोगो-बियाधि तँ ओहने ने धड़त।

मने-मन सुगिया काकी वौआइते छेली कि वरस्पैत कक्काक अवाज सुनली।

ओना, वरस्पैत काका ओछाइन छोड़ि उठि गेल छला, तहूमे गाममे बिजली आबि गेने देहक पानिमे सेहो कनी-मनी करेन्ट आबिए गेल छेलैन। ओछाइनपर सुतले-सुतल सुगिया काका बजली-

"दिन-रातिक वसन्त वेलमे किए औनाइ छी?"

अपन मनक बाट पकैड़ वरस्पैत काका शेष जिनगीक दिशामे

दिशा ताकए चाहै छला तँए पत्नीक बातकेँ नीक जकाँ अँगेज नइ सकला। अपने बेथे बेथाएल बेकती जकाँ वरस्पैत काका समाजिक जिनगीमे पएर रोपए चाहै छला। तँए विचारसँ लऽ कऽ समाजक सम्बन्धक क्रिया धरि संलग्न करबाक छैन। नोकरिहारा जिनगी रहने एते तँ भइये गेल छेलैन जे गाममे नइ रहने छुतको केश आ सराधो-बिआहक भोज छुटि गेले छेलैन जइसँ समाजिक सम्बन्धमे सेहो कमी आबिये गेल छेलैन।

वरस्पैत काका बजला-

“औनाइ कहाँ छी, पौनाइ तकै छी। दुनू गोरेक बीचक जिनगीक बात अछि किने, तँए दुनू गोरे जँ विचारि नइ चलब तँ सदिकाल दुनू परानियोँमे खटपट होइते रहत।”

जिनगीक अलिसाएल (माने अठबजिया सुति उठनिहारि) देह, मुदा पतिक विचार तँ सेहो दोसर पाशापर छेलैन्हे। अँघस-मँघस करैत सुगिया काकी उठली। उठि तँ गेली मुदा मनमे होनि जे कनीकाल आरो ओछाइन धेनहि रहितौं...।

अपन ऐगला जिनगीक ओहन रूप वरस्पैत काका बनबए चाहै छला जेना समाजमे समाज बनि समाज रहैए। मुदा समाजो तँ समाज छी। सनातनी धारामे बहैत नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधलाकेँ अपन धारमे गलित-पचित करैत अनवरत बहैत आबि रहल अछि आ आगूओ बहैत रहत। भलेँ गदियाएल बेसी हुअए कि मटियाएल। मुदा वरस्पैत काका तँ नीतिशास्त्रक विद्यार्थी, विद्यार्थी जीवनसँ शिक्षक धरि रहला तँए मन बेसी ओम्हरे लटकल रहैन। ओना, ई बात वरस्पैत काकाकेँ बुझल छैन जे नीति, रीति, गीत, मीत आ हित समय आ स्थानक अनुकूल चलैए। जँ से नइ चलैत तँ गीत गीते छी जे नीके लगैए मुदा समय-स्थानक भेद भेने किए कोइलीक स्वर कौआक भऽ जाइ छइ?

ओछाइनपर पड़ल सुगिया काकीक मन अग-दिगमे पड़ल छेलैन।

जँ उठै छी तँ अपन सुखक नीन जाएत आ जँ नइ उठै छी तँ पतिक पतिपना जाएत। तहूमे काल्हिये सेवा निवृत्ति भेला अछि, लगले कहता जे जाबे कमाइ छेलौं माने नोकरी करै छेलौं आ हाथमे हरियरका कड़कड़ौआ नोट दइ छेलिऐन ताबे कमासूत पति छेलिऐन आ सेवा-निवृत्त होइते बोल-कहल भऽ गेली!

सामंजस करैत सुगिया काकी बजली-

"अखन ऐ अधरतियामे केतए जाएब! आउ, अही ओछाइनपर बैस जिनगीक सूत्रधार जकाँ अपनो दुनू गोरे सुतियाउ।"

ओना, पत्नीक जे आग्रह छेलैन से वरस्पैत काका नइ बुझि पेला। तेकर कारण भेलैन जे पत्नीक पहिल शब्द जे 'अधरतिया' छेलैन, तेहीक वेद-भेद करैमे ओझरा गेल छला। जइसँ ओछाइन तक अबैत-अबैत धियाने हटि गेलैन।

वरस्पैत काकाकेँ मनमे उठल छेलैन 'अधरतिया' की भेल? यएह ने भेल जे जँ छह बजे सुर्यास्त होइए आ दोसर दिन छह बजे सुर्योदय हएत, तेकर बीचला सीमान बाहर बजे राति भेल। बाहर बजे रातिक पछाइत ने राति छोट होइत जाएत जइसँ अधरतिया बनत। अखन तँ रातिये राति ने राति चलत। मुदा भोरक उदय आ रातिक अस्त सेहो तँ एकटा सीमाने भेल किने। तैबीच जखन राति खटिया कऽ आधापर औत तखनो ने अधरतिया औत..?

मनक ओझराएल विचारकेँ सोझरबैत वरस्पैत काका बजला-

"बड़बढ़ियाँ कहलौं। अहूँ उठि कऽ बैसू आ हमहूँ बैसै छी।"

नइ चाहितो सुगिया काकी उठि कऽ बैसैत बजली-

"अहाँ सिरमा दिस बैसब आकि गोरथारी दिस?"

पौरुकी जकाँ जे तीन बजे भोरे घुटैक-घुटैक अपन मेदिनकेँ जगबैए आकि मेदिने घुटैक-घुटैक मेदकेँ जगबैए से तँ पौरुकीए जानए,

मुदा वरस्पैत कक्काक मन अपन ऐगला जिनगीक सूत्रपात करैमे ओझराएल रहैन।

बजला-

"दुनू परानीक बीच जेहने सिर तेहने गोर, तइले अनेरे किए बातकेँ बतंगर बनबै छी।"

बजैक क्रममे वरस्पैत काका बाजि तँ गेला, मुदा लगले मन पाछू घुमि छछाड़ी काटए लगलैन जे जेहने दुनियाँक रीति-प्रीत अछि तेहने तँ बेरीतो आ बेप्रीतो अछिए। किए कियो केकरो दस थापर मारि मनकेँ शान्ति दइए? जखन कि सभ बुझै छी जे विचारक मिलानसँ शान्ति अबैए, तहिना ने प्रेमी-प्रेमिकाक बीच प्रेम सेहो शान्ति दइए...।

अपन विचारमे वरस्पैत काका डुमल रहैथ तँए मुहोँ बन्न रहैन आ ओछानिक कातमे ठाढ़ो रहैथ।

पतिकेँ चुपचाप ठाढ़ देख सुगिया काकीक मनमे शंका भेलैन जे भरिसक मने-मन मन्हुआ ने तँ रहल छैथ। पति-पत्नीक बीच जँ पति मन्हुआ कऽ महुरा जाथि सेहो पत्नीक लेल उचित नहियेँ भेल। तखन तँ ई भेल जे पतिक अनुकूल पत्नी नइ छैथ वा पतिकेँ अनुकूल बनबैक कला पत्नीकेँ नइ छैन। अपनाकेँ पाछू दिस घुसकबैत सुगिया काकी बजली-

"एकटा बात बुझलिऐ?"

जिज्ञासा करैत वरस्पैत काका बजला-

"की?"

मुस्की दैत सुगिया काकी बजली-

"स्वतंत्र जिनगीक पहिल राति दुनू परानीक छी?"

'स्वतंत्र जिनगी' सुनिते वरस्पैत कक्काक मनमे गंगा-लहरिक ओ मौज जे जमुना धार होइत बहैए, भेटलैन। मुस्कान भरैत वरस्पैत काका

बजला-

"सहए ने कहए चाहै छी!"

कहि वरस्पैत काका पत्नी लगसँ सहटैत अपन ओछाइन दिस बढ़ला। ओछाइन लग अबिते औनाइत मनमे उठलैन जे जँ कियो जिनगीक सुत्रधारमे संगी होएत तँ जरूर जिनगीक दिशा निरंतर संग होएत। मुदा घरक जखन पत्नियोँ सएह छैथ तँ पड़ोसी आकि बहरबैया अखन भेटबे किए करता। ओहू वेचारा पड़ोसीक मनमे हेबे करतैन किने जे काल्हिये वरस्पैत गुरुजियाइसँ सेवा निवृत्त भेला अछि, धएल-उसारल लऽ कऽ एबे कएल हेता, जँ पेशावो करैकाल ओमहर ताकब तँ दुनू परानीकेँ मनमे हेबे करतैन जे रतिचर छी। जँ दुनू परानीक बीचक गप-सप्प रहैत तँ गोनू झाक चोरो पकड़ब होइत। मुदा सेहो नहियेँ अछि।

ओछाइनिक कातमे ठाढ़ भेल वरस्पैत काका कुशेश्वर स्थान जकाँ हेरा गेला। माने ई जे जैठाम एक नइ अनेक धारक मिलान होइए। धारक पेट भलेँ हटलो-हटल किए ने होइ मुदा बाढ़िमे उफान एलापर सभ सभमे मिलिये जाइए। तँए कुशेश्वर स्थानक भवलोक तँ अगम अछिए। ओना, चण्डेश्वर स्थानमे सेहो सुपेन धार अछि, मुदा एक तँ जुति-भाँतिमे ओछ आ दोसर समूह नहि, असगरुआ अछि। तँए अपन ताले-मात्रा केते देखा सकैए। बड़ करत तँ धरतीसँ सटल ट्यूवेलकेँ डुमौत, मुदा पानियोँ पीबकेँ नहियेँ रोकि सकैए। धरतीसँ भरि छाती ऊपर उठा चबुतरा बना लोक पानिक जोगार कइये लेत आ चापाकलक पानि पीबे करत। मुदा कुशेश्वर स्थानमे धारक पानि बेराएब ओते असान अछि जे कोसी-सँ-कमला धरि आ करेहसँ तिलजुगा धरिक धारक पानिक संग मिलि हेलबो करैए आ समुद्री बाट पकैड़ चलबो करैए...।

कछमछ करैत वरस्पैत काकाकेँ किछु फुरबे ने करैन जे की केने की हएत। अखन धरि किताबक ने कीड़ा बनि चटलौं मुदा समाजोक

बीच तँ कीड़ा अछिए। ओकरा केना पकैड़ पएब..?

अपन बीतल समय माने दुनू परानीक साठि बर्ख तँ वरस्पैत काकाकेँ आधा-छिधा मनो पड़ैन मुदा आगूक जे मृत्यु धरिक शेष जिनगी अछि, से बुझिए-मे ने अबैन। बुझबो धिया-पुताक धूरा-माटिक खेलो नहियेँ छी। ओना, किताबी बोध भेने आगू-पाछू दुनूक नक्शा मन पड़ैन मुदा नक्शाक नक्शा केना बनत, जाबे नक्शा नै बनत ताबे नक्काशी केना आबि पौत? ऐठाम आबि वरस्पैत कक्काक मन घुरिया जाइन। तँए ने पुन: ओछाइनपर पड़ला आ ने आन दोसरसँ गपे-सप्प कऽ सकला।

किरिणक लालिमा अकासमे पसरल। वरस्पैत काका बुझि गेला जे आब पौह फाटि रहल अछि, दिनक आगमन लगिचा गेल...।

वरस्पैत काका पत्नी लग जा बजला-

"आब की कोनो नोकरीक जिनगी रहल जे आठ बजे तक ओछाइने धेने रहब। जाबे हम मुँह-कानमे पानि लइ छी ताबे अहूँ चाह बनाउ।"

ओना, सुगिया काकीकेँ सेहो चाह पीबैक इच्छा जगैत रहैन मुदा कोढ़िया लेल जहिना गंगा दूर अछि तहिना सुगियो काकीकेँ रहैन। तैयो वेचारी पतिक बातकेँ आदेश बुझि चाह बनबए उठली।

चाह बनल। दुनू परानी चाह पीविते रहैथ कि पड़ोसीक एकटा दस-बारह बर्खक कन्याँ रस्ते-रस्ते दौड़लो जाइत आ बजबो करैत-

"सुमित्रा बहिन सीमा कातमे बैसल छथिन।"

ने ओ लड़की वरस्पैत काकाकेँ आकि सुगिया काकीकेँ किछु कहलकैन आ ने इहए दुनू गोरे किछु पुछलखिन।

लड़कीक मनमे भेल जे भऽ सकैए जे जखन गामेमे बीआ-वान भेल अछि तखन माए-बापक कानमे केतौ नहि गेल होनि, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

सुमित्रा वरस्पैत कक्काक बेटी। मुदा बेटीक रूपमे अखन तक वरस्पैत काका सीमा कातमे बैसल सुमित्रापर विचार नइ केने छला। तँए मनमे भेलैन- गामे छी, केतेको लोकक नाओं सुमित्रा हएत।

दोसर, ईहो भेलैन जे बेटी-जातिक लेल ने नैहर-सासुर अबै-जाइक विधि-विधान अछि, तइसँ हटल सेहो अछिए, तँए अखन तक दुनू परानीक मनमे ई नइ उठल छेलैन जे हमरे बेटी सुमित्रा छी।

ओना, अखन धरि सुगिया काकी उड़न्ती सुनने छेली, तँए उड़न्तीकेँ घरनी रूपक भाँजमे छली। मनमे एहेन विचारो केना जगितैन जे एकटा प्रशासनिक अफसरक परिवारमे–माने वरस्पैत कक्काक ओ बेटी प्रशासनिक अफसरक पत्नी छथिन–एना हएत। तँए एहेन विचार मनमे अबै ने दैन। एबो किए करितैन, जे जिला-जवारक भार उठा चलैबला अछि ओ परिवारमे लुल्हो-नाँगर केना भऽ सकैए। तही बीच अलोधनी काकी जे सुगिया काकीसँ उमेरदार छथिन, आबि कऽ सुगिया काकी लग बजली-

“कनियाँ, छोटकी बेटी आबि कहलक जे ‘वरस्पैत कक्काक सुमित्रा बेटी सासुरसँ अधरतियेमे निकैल माए-बाप ऐठाम आबि गेली.!”

तैबीच टोलक दस-बारहटा अबोध-सँ-सबोध धरिक लड़की आँगन पहुँच गेली। आँगनक सीमामे सभकेँ प्रवेश करिते सुगिया काकीक नजैर पड़लैन। तैबीच सुमित्रा रस्तेसँ ठोह पाड़ि कनैत आबि रहल छेली।

ओना, गाम-घरमे कननिहारो कम नहियेँ अछि, कियो दुखे आ कियो सुखे मुदा कनैत तँ सभ अछिए। तँए कियो अनका कानबपर किए धियान देत। अहीं कहू जे ‘कन्याँदान’ सन समाजक कृति, दान-दहेज बेर माने बेटीक बिआह काल सभ डिरिआइ छी, मुदा छुच्छे डिरियेनौं तँ नहियेँ हएत। पढ़ल-लिखलसँ बिनु पढ़ल-लिखल धरिक लोक, किए ने बुझि पेब रहल छैथ जे परिवार-समाजक संस्कारसँ जुड़ल प्रमुख समस्या

अछि, जैपर परिवार-समाजक नीब ठाढ़ अछि?

जहिना बाघक आँखिपर आँखि पड़ने बघजर लगि जाइए तहिना सुगिया काकीकेँ सुमित्रापर पड़िते भेलैन। बघजर लगिते सुगिया काकी अचेत भऽ खसि पड़ली। खसला पछाइतो मनमे बेर-बेर उठैत रहैन जे ई की भेल.! एना किए भेल..?

ओना, ई सुगियो काकी आ वरस्पैतो काकाकेँ बुझल छेलैन जे दस बर्ख पूर्व जमाए दोसर बिआह कऽ नेने छला, जे अन्तर्जातीय छल।

जहिना कानक गुज्जी निकालै-काल गोटे बेर रूइया कानेमे अँटैक जाइए आ कटकी निकैल जाइए, आ तखन वएह रूइया केते भारी कानकेँ लगै छै, से भुक्तभोगिये ने जनै छैथ मुदा रूइया सन हल्लुक वौस रहितो, एते भारी कानमे केना लगैए जे ठेकी जकाँ सुनबे बन्न कए दइए तहिना अँगनाक दृश्य भऽ गेल।, जे बच्चा-सँ-सियान आ चेतन-सँ-बुढ़ धरिसँ भरिया गेल छल। जेते मुँह तेते बोल...।

वरस्पैत काकाकेँ सुमित्रा बेटी लग पहुँचैक साहस नहि भेलैन जे किछु पुछितथिन। ओसारक खाम्ह लगा ओंगैठ कऽ बैस अपन जिनगीकेँ निहारए लगला। भूल केतए भेल आ चूक केतए भेल? जा भूल-चूक नइ भेल ता एहेन दृश्य उपस्थित किए भऽ रहल अछि।

ओना, वरस्पैत कक्काक मन समस्याक हिसाबे भरियाएल नहियेँ रहैन, तेकर कारण ई जे मनो तँ मन छी, अधमनीसँ डेढ़ मनी धरि होइत अछि...। ओहन मन ने बेसी भरिया जाइए जे समस्याक भारीपनकेँ बेसी देखैत हुअए, मुदा जे ओइ भारीपन के देखबे ने करत, ओ ओकर भारीपन बुझिए केना पाबि सकैए। वरस्पैत कक्काक जिनगीमे ओहन परिस्थितिये ने बनल जे ओइ गहराइक तह तक पहुँच पेबतैथ।

खाम्हमे ओंगठल वरस्पैत कक्काक नजैर सुमित्रापर गेलैन। पैंतीस बर्ख पूर्व सुमित्राक जन्म दोसर सन्तानक रूपमे भेल। ओना, गाम-गामक

अपन-अपन समाज चलिये आबि रहल अछि। कोनो गामक समाजमे कोनो जातिक वाहुल्य अछि तँ कोनोमे कोनो जातिक, जइ समाजक माने जइ जातिक वरस्पैत काका छैथ, ओ अल्पसंख्यक जातिक समाज अछि। एक-दू घर दसटा गाममे गनि-गूथि कऽ अछि। समाजक सम्बन्धक एकटा कारण ईहो ऐछे जे जेतेक दूरमे बेटा-बेटीक बिआह-दान होइए ओतेकक बीच समाजिक सम्बन्धक एक रूप-रंग सेहो बनियेँ जाइए। तँए सनातनी धारामे अबैत समाज टुट-नफा होइतो बहिये रहल अछि।

जइ समाजक वरस्पैत काका छैथ, ओइ समाजमे दस बर्खक कन्याँ होइते बिआहक योग्य मानल जा रहल अछि। समुचित पद्धतिक अनुकूल लड़का-लड़कीक उमेरक हिसाबमे सेहो एकरूपता हएब जरूरी अछिए। जँ से नइ हएत तँ विधवाक बाढ़ि जोर पकड़बे करत। ओना, विधवाक बाढ़ि जोर पकड़नहि अछि तेकर कारण आन-आन, अछि।

तेरह बर्खक सुमित्राक बिआह सत्तरह बर्खक दीनबन्धुक संग भेल छेलैन। ओना, कौलेजमे पढ़ैत दीनबन्धुक मनमे तत्खनात् बिआह करैक विचार नइ रहैन, मुदा देखो-देखी आ समाजक चलैनक अनुकूल सेहो दीनबन्धु विरोध नइ कऽ सकल।

बिआहक तीन सालक पछाइत दुरागमन भेलैन, तइ बिच्चेमे दीनबन्धु नोकरी लेल प्रतियोगिताक परीक्षाक तैयारी सेहो पूरा कऽ लेलैन। परीक्षामे नीक रिजल्ट भेलैन, प्रशासनिक अफसरक बाट प्रशस्त भेलैन।

दुरागमनक पछाइत सुमित्रा सासुर एली। एक तँ किसान परिवार, दोसर पाछूसँ अबैत परम्पराक बीच सुमित्रा अपन जिनगी बितबए लगली।

ओना, दीनबन्धुक प्रेमक अँकुर विलासनीक संग ट्रेनिंगे समयमे अँकुर गेल रहैन। मुदा ओ प्रेम, संगी-साथीक रूपक छेलैन। ट्रेनिंग केला

पछाइत एक्के जिलामे दीनबन्धुओ आ विलासनियोँ पदस्थापित भेलैथ। पदस्थापित भेला पछाइत दुनूक बीच संगीक रूप छल। दुनूक जातियो दू अछि। अखन धरिक अबैत विचारमे जातिक दूरी मनमे बनले छेलैन।

ओना, जइ जातिक दीनबन्धु छैथ, ओइ जातिमे एकसँ बेसियो बिआह करैक चलैन जकाँ बनियेँ गेल अछि। माने ई जे जेते गाममे दीनबन्धुक जाति छैन, प्राय: सभ गाममे एकाध गोरे एहेन छैथे जे दू-तीन-चारि-पाँच बिआह केनहि छैथ। ओना, परम्परानुकूल एक-पुरुखकेँ एक नारीक संग बिआहक चलैन अदौसँ आबि रहल अछि, मुदा पुरुखक लेल एकसँ बेसी बिआह करब एक्की-दुक्की अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

तइसँ भिन्न विलासनी जातिक अछि। विरले एहेन अछि जे एकसँ बेसी बिआह केने छैथ। ओना, परिवार चलैक लेल केतौ-केतौ एकसँ बेसी बिआहक खगतो अछिए। जेना पहिल पत्नी माने बिआही कनियाँ जँ कोनो कारणे निसन्ताने मरि गेली, वा बाँझपन छैन वा कोनो एहेन रोगसँ ग्रसित छैथ, जइसँ जिनगीक भरोस उठि रहल अछि। एहने-एहने कारणे विलासनीक जातिमे विरले एकसँ बेसी बिआह होइत अछि।

नव परिवेशमे जातिक सम्बन्धमे किछु ढील-ढीली, छुटपन आबिये गेल अछि। गामो-समाज तँ गाम-समाज छी, प्रेमक सेहो अपन आँखि होइते अछि। ओना, आँखियो तँ आँखि छी, जे केतौ छिछड़पन अछि तँ केतौ गढ़पन सेहो अछि। छिछड़पन भेल उमेरक उमंगमे बहब आ गढ़गर भेल गुण-विशेषक आकर्षण।

जहिना दीनबन्धु बी.ए. ऑनर्स अर्थशास्त्र विषयसँ केने छैथ तहिना विलासनी सेहो अर्थशास्त्रेसँ बी.ए. ऑनर्स छैथ। विषयो विषयक तँ अपन छाप पड़िते अछि। एक रंग हाइयो स्कूल वा कौलेजोमे रहितो विषयवार-प्रभाव नइ पड़ैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना, भाषाक

रूपमे साहित्य सेहो दुनू गोरे कौलेज तक पढ़ने, मुदा भारतीय साहित्यक अपेक्षा अंगरेजी साहित्य बेसी। ओना, अंगरेजी साहित्य पढ़ैक पाछू दुनूक मनसा यएह रहैन जे प्रशासनिक परीक्षा पास करब। ओना, अर्थशास्त्रक प्रभाव दुनूक मनकेँ बेसी पकड़ने रहैन। जइ दुआरे प्रतियोगिता परीक्षामे पूर्णरूपेण अर्थशास्त्रो रखनहि रहैथ।

गनले-गूथल प्रशासनिक अफसर जिलामे अछिए। तहूमे जे लगक रहता हुनकेसँ ने भेँटो-घाँट आ गपो-सप्प हएत। ओना, सरकारी सेवामे काजोक सम्बन्ध बनियेँ जाइए। सएह सभ कारण दीनबन्धुओ आ विलासनियोँक बीच भेबे कएल।

आजुक परिवेशमे देशक बहुतो जगह एहेन ऐछे जइमे प्रशासनिक सेवाक रूपे बदलल जा रहल अछि आ वेपारीक रूप बढ़ल जा रहल अछि। साधारणो अफसरक लेल करोड़क खेल चलिये रहल अछि।

नव पीढ़ीक उदीयमान शक्ति जे अनेको विषयक अध्ययन कऽ रहल अछि, ओकर इतिहास देख रहल अछि। तैठाम मनुखेक इतिहास छुटि जाए, सेहो तँ सम्भव नहियेँ अछि। विकास प्रक्रियामे आजुक परिवेशक इतिहास की कहि रहल अछि, ओ प्रशासनिके अफसर नइ बुझैथ तँ दोसर बुझिये के सकैए?

दीबन्धुओ आ विलासनियोँ एक-उमेरिया घोड़ा जकाँ सरपट चालिमे दौड़ए लगलैथ। ओना, दीनबन्धुक बिआह आ दुरागमन दुनू भऽ गेल छेलैन, मुदा किसान परिवार आ नोकरिहारा परिवारक बीचक जे खाधि सभ अछि, ओइ खाधिमे एकटा ईहो तँ ऐछे जे जँ पच्चीस बर्खक बेटा-पुतोहु अपन घर बसौता आकि माता-पिताक घरवास करता? प्रश्न तँ अछिए। खाएर जे अछि, मुदा दीनबन्धु अखन तक परिवारक संग माने पत्नीक संग नइ रहला।

ओना, विलासनियोँक उम्र चढ़ि कऽ डम्हा गेल छेलैन मुदा छेली

अविवाहित। प्रश्न एहेन उठि गेल जे कन्याँ-जोकर बरे ने भेटैए। सरकारियो शासन कमजोरे अछि जे गनि-गनि ओकरा जोड़ा लगबै ने अबै छइ।

अपन रंगीन भविस देख दुनू बिआह कऽ लेलैन। ओना, जातीय संस्कार दीनबन्धुक सोल्हैनी नइ मेटाएल छेलैन मुदा घोड़ा हौउ कि घोड़ी, लगाम तँ लगौले जाइए। तइ सीमामे दीनबन्धु छिछैल जाइ छला। जइसँ लगाम विलासनियेँक हाथमे रहलैन। तहूसँ जबरदस दीनबन्धुक मनकेँ ई दबने रहैन जे जइ वादाक संग विलासनीक संगी बनल छी तइ वादाक अनुकूल तँ सुमित्राकेँ बिनु पतिक सासुरे बसए पड़तैन..! खाएर.., भेबो सएह कएल।

मुदा समाजो तँ समाज छी। दीनबन्धुक पिता–सोनाइ–केँ समाज सलाह देलकैन जे अखन अपनो दुनू परानी हट्टा-कट्ठा छीहे मुदा नारीक तँ ई उम्र नारीत्व प्राप्त करक छिऐन। तँए अपने पुतोहुकेँ बेटाक डेरा पहुँचा दियौन।

एक तँ जुआनीक लहैर, तैपर कुरसीक धाह दीनबन्धुकेँ रहबे करैन, पत्नीक संग पिताकेँ सेहो देखलैन।

ओना, अखन तक दीनबन्धु विलासनी लग ई चोरौने रहला जे सुमित्राक संग विवाहित छी। तँए चोटाएल गहुमन साँप जकाँ आँत ममोड़ि चुप भऽ गेला।

एक नारीक जिनगीकेँ देख विलासनी ससुरकेँ कहलैन-

“जखन अपन लोक छैथ तखन किए ने रहती?”

ओना, विलासनीक विचार सोझगर छेलैन, मुदा मनमे रहैन अपनाकेँ चुल्हि-चौकाक कारिखसँ बँचाएब।

सोनाइक नजैर दीनबन्धुपर पड़िते विलासनीपर चलि जाइन। नजैर जाइते मनमे खौंझ उठि जानि, अपन परिवारक ई गति। एक तँ

समरथाइयोमे कियो केकरो भार नइ लिअ चाहैए, तैठाम तँ हम पचास टपि गेल छी।

जिनगीक टुटैत धारमे सोनाइक टुटैत विचार भँसिया रहल छेलैन। अन्हार, दुनियाँक चारूकात अन्हार, की यएह छी मनुखक जिनगी..?

जिनगीक पछाड़मे पछड़ैत सोनाइ विलासनीकेँ कहलखिन-

"परिवारक रत्न पैदा करैवाली सुमित्रा छैथ, नोकरनियोँ बनि जँ रहती तैयो अपन परिवारक सुख हेबे करतैन।"

धीरे-धीरे लोकक भीड़ कमए लगल। जेना-जेना लोकक भीड़ कमल तेना-तेना सुगिया काकीक मन सेहो हल्लुक हुअ लगलैन। अन्तो-अन्त टोलबैयासँ आँगन खाली भेल। खाली होइते सुमित्रा वरस्पैत काका लग पहुँच, पएर पकैड़ कानैत बजली-

"पिताजी, हमर नारीत्व नइ भेटत?"

वरस्पैत कक्काक दुनू आँखिसँ अन्हार रातिक वरिसैत वादल जकाँ नोरक टघार चलिते रहलैन। मुदा उपाइए की? अपन दोख मेटबैत वरस्पैत काका बजला-

"हमर कोन दोख।"

बाजैक क्रममे वरस्पैत काका बाजि गेला। मुदा लगले मन रोकैत कहलकैन-

"तखन दोख केकर?"

जिनगी भरि वरस्पैत काका नीतिशास्त्रक विद्यार्थी, शिक्षक रहला मुदा समाज जे घृणित अनीतिमे बहि रहल अछि, ओकराकेँ सम्हारत। मुदा मनुख एक रहितो विचारो आ बेवहारोमे हटल-हटल अछिए। वरस्पैत काका विद्यालयमे शिक्षण वृत्तिसँ जुड़ल रहला तँए समाजक रीति-नीतिसँ हटल नइ रहला सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

जहिना हवामे करवनो-करवनो झोंक अबैए तहिना वरस्पैत कक्काक मनमे रहि-रहि कऽ झोंक उठैत रहैन, मुदा अपना लग अबैत-अबैत झोंकक झोंकी झूकि जाइन। फेर झोंकाएल मनक नजैर पड़लैन- समाजक दर्पण अपन साहित्यपर। यएह दर्पण साहित्य छी? अही साहित्यसँ सबहक हित हएत?

मुदा अपना लग अबैत-अबैत वरस्पैत कक्काक अपने मन दुतकारि दैन जे समाजक सन्तान रहनौं समाजसँ दूर रहलौं, जँ समाजक संग रहितौं तँ केतौ-ने-केतौ हमरो जगह तँ रहबे करैत। समाजक बुधिजीवी श्रेणीक रहितो हम केतए छी?

नीक जकाँ वरस्पैत कक्काक मन थीरो ने भेल छेलैन कि दोसर उमकी चढ़लैन। उमकी चढ़िते मुँह फुटलैन-

"समाजेक सन्तान ने हमहूँ छी आ हमरो ने समाज छी, तैठाम हमरा सन लोकक विचारक अँटावेशो तँ समाजे ने करत?"

वरस्पैत कक्काक आगूमे ठाढ़ पैंतीस बर्खक नि:संन्तान बेटी अपन जिनगी देरव रहल अछि। मने-मन वरस्पैत काकाकेँ कूहि होइ छेलैन, मुदा के कूहि रहल अछि आ के कुहा रहल अछि से वरस्पैत कक्काक मनमे एबे ने करैन।

अनमनस्यक भेल वरस्पैत काकाकेँ देरव सुमित्रा टोकलकैन-

"बाबूजी, पिता तँ अहीं छी किने! अपन बेथा केकरा कहब?"

ओना, वरस्पैत काका बजैमे पीछराह सभ दिन रहला, तँए बजैक क्रममे कहियो नहि चुकला। तहूमे बेथाएल-सोगाएल पैंतीस बर्खक ओहन बेटी जे नारीत्वसँ हारि रहल छैन, संग-संग जिनगीक पछाड़ सेहो छैन्हे। बेटी छी से विधाताक डायरीमे सेहो अंकित अछि, मनुरवक जीवनक सार्थकता सेवासँ होइ छै, माए-बापक सेवासँ पैघ धर्म ओहन नारीक लेल नहि अछि जे पतिव्रतसँ वंचित हुअए।

वरस्पैत कक्काक भाव-विचार देख-सुनि सुमित्राक मन जेना पुलकित भेल। पुलकित होइते पुलैक कऽ बजली-

"पिताजी..?"

'पिताजी' सुनि वरस्पैत कक्काक मन चौंकलैन। बजला-

"बेटी, चरेवेति-चरेवेति वेदवाक्य अछि। जे जिनगी चलायमान रहल वएह जिनगी जिनगी छी। जाबे जीब ताबे तोरा बिसरबह नहि।"

सुमित्रा जइ मने बाजल होथि, मुदा वरस्पैत कक्काक मनमे भेलैन जे बड़का धसनाक तरमे पड़ि गेलौं। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे कोनो सन्ताप मनुखकेँ जीते जिनगी होइ छै, तँए कोनो सन्तापसँ तखने बँचि सकै छी जखन ओइ सन्तापितकेँ ता-जिनगी पकड़ने रही जा जिनगी रहए। समैयक हवा कखनो आगूओ दिस झोंकैत आ कखनो पाछूओ दिस, जइसँ ओकर गति-विधिमे उतार-चढ़ाव अबिते अछि। मुदा मनुख तँ मनुख छी। हवा-बिहाड़िकेँ अनुकूलो बना सकैए आ ओकरा मोड़ियो सकैए। मुदा प्रश्न तँ सामूहिक छी। सामूहिक समस्याक समाधान तँ समूहे ने कए सकैए। जँ ओकरा बेकतीगत रूपमे कएलो जाएत तँ ओ समूहक बीच हेराएले रहत। जँ से नहि रहैत तँ की हमरा सिर जे बरिसल अछि ओ दोसराक सिर नहि बरिसत, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए...।

विह्वल होइत वरस्पैत काका सुमित्राकेँ पुछलखिन-

"बुच्ची, सत-सत कहह जे जिनगीक सुखसँ वंचित छह आकि जिनगीक सुख भेट रहल छह?"

पिताक प्रश्नसँ सुमित्रा तिलमिला गेली। तिलमिला ई गेली जे जिनगीक सुख की? जहिना गाछो-बिरीछ आ लत्तियो-फत्तीमे एके गाछमे हजारो मुड़ी रहैए, सभ मुड़ीकेँ अपन-अपन खगता छै, जइसँ ओ लहटगर बनि बढ़बो करैए आ फुलेबो-फड़बो करैए। तहिना ने मनुखोक जिनगी अछि। ओना, कहैले मनुखकेँ एकेटा मुड़ी होइ छै मुदा से नहि। जिनगीक

बढ़ैत क्रममे हजारो-लाखो मुड़ीक सृजन होइ छै आ ओकर भरण-पोषनक पाछू लोक हाल-बेहाल रहैए...।

पिताकेँ की उत्तर सुमित्रा देती, से स्पष्टे ने भऽ रहल छैन।

तैबीच सुगिया काकी सेहो आँखिक नोर आँचरसँ पोछैत वरस्पैत काका लग पहुँचली।

माएपर नजैर पड़िते सुमित्राक नजैर निच्चाँ उतैर अपन मातृत्वपर गेलैन। मुदा समाजो तँ समाज छी। मर्यादा अमर्यादाक विचार करैबला।

लड़खड़ाइत-लटपटाइत सुमित्राक मुहसँ निकलल-

"बाबूजी, नैहर-सासुरमे किछु अन्तर तँ अछिए?"

सुमित्राक बात सुनिते वरस्पैत काका सहमला। सहैमते मनमे उठलैन, बेकती-बेकती मिललासँ समाज बनबो करैए आ हटलासँ टुटबो करैए, जेहेन समाज निरमित हएत तेहने ने ओकर आचार-विचार आ बेवहारो बनत। मुदा से बनाएब ओतेक असान कहाँ अछि? जैठाम प्रतिदिन विकृति मनुखक निर्माण होइए तैठाम सुशिष्ट समाज केना बनि पौत? ओना, बोली-चालीक क्रममे वास्तविक जिनगी किए ने सटल हुअए मुदा बेवहारिक रूपमे हजारो कोस हटल नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मन-वचन-कर्मक एक सूत्रवाक्य किए ने हुअए मुदा तीनूक दूरी अकासो-पतालसँ बेसी हटल अछिए।

अकास-पतालक बीच वौआइत वरस्पैत कक्काक मन अँटैक गेलैन। अँटैकते मन कलशलैन। कलैशते बेटी सुमित्रापर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते बुझि पड़लैन जे यमुना धार जकाँ जमुनियाँ नोर बेटीक नयनसँ निकैल पितासँ किछु याचना करए आएल अछि। मन पघिल गेलैन। पघिलते फुटलैन-

"जहिना हम मनुख छी, तहिना ने सुमित्रो अछि। सबहक अपन-अपन जिनगी आ अपन-अपन जिनगीक लीलाक संग विचारो-विवेक

अछि, तैठाम बलउमकी बलबा सेहो नीक नहियेँ अछि, मुदा प्रश्नो तँ जिनगियेक छी। जँ मनुखकेँ जिनगीए नहि तखन ओ पशुवत छोड़ि ऐछे की?”

वरस्पैत कक्काक मन जे अखन तकक जिनगीमे घोड़-दौड़ रूपे चलै छेलैन ओ एकाएक ठमैक गेलैन। ठमैकते बुझि पड़लैन जे मुरदा जकाँ अस्सी मन पानि शरीरमे आ नबे मन जारैन शरीरपर लदि गेल अछि। मुदा उपाइये की अछि?

ठमकल मनसँ ठीठैक कऽ विचार निकललैन-

“मनुख-मनुखक सहयोगी तँ भइये सकैए। मुदा जेतबे धरि अपन सीमा अछि तेतबे धरि ने नाचत। हमहीं सुमित्राक पिता छिऐ, जँ हमरे हाथ-पएर टुटि जाएत तँ सुमित्रे की हमर देहक दुख छीन सकैए? ओ तँ अपने ने भोगए पड़त? अखन आँखि तकै छी तँए सन्ताप बुझि पड़ैए, आ जँ आँखि बन्न रहैत तखन देखबे की करितिऐ?”

मुदा लगले वरस्पैत कक्काक मनमे ईहो उठलैन जे जँ बेटीक दर्द बाप नइ बुझै आ बापक दर्द बेटी नइ बुझै तखन दुनूमे सामंजसे केना भऽ सकैए? रहल अपन कर्तव्य से तँ काजेसँ देखल जाएत। ओकर क्षेत्र तँ खाली विचारे धरि नइ अछि। ओ तँ बेवहारमे सेहो अछिए।

..भटकैत विचारक बोनमे वरस्पैत काका अँटकैत बजला-

“बेटी, जहिना अखन धरिक जिनगी घर-सँ-बाहर बीतल मुदा तैयो परिवारक सेवा करैत रहलौं, तहिना आगूओ ताधैर करैत रहब जाधैर तोरा सन जिनगी समाजमे बेटीकेँ भेटैत रहत।”

बजैक क्रममे वरस्पैत काका एकसूरे बाजि गेला मुदा बजला पछाइत जखन पाछू उनैट तकलखिन तँ बुझि पड़लैन जे जहिना अपने बिनु सींग-नाँगैरक छी तहिना तँ समाजो अछि। केकरा कहबै के सुनत? लोको तँ लोके छी। बेटाक बिआहमे राजा बनि जाइए आ बेटीक

बिआहमे भीखमंगा जहिना बनि जाइए तहिना ने केतौ जातिक समाज तँ केतौ गामक समाज सेहो बनिते अछि।

बेथासँ बेथित पतिक मुँह देख सुगिया काकी सामंजसमे बजली-

"जइ सोगे सोगाएल छी आकि जइ बेथे बेथाएल छी ओ ने कोनो सोग छी आ ने बेथा। जाबे आँखि तकै छी ताबे आँखिक सोझमे सुमित्रो रहत। जिनगीक कोनो ठेकान अछि जे पहिने के आँखि मूनब।"

पत्नीक विचार सुनि वरस्पैत कक्काक मन कनी खनियेलैन। खनियाइते मनमे सुमित्रा सन बेटीक पौराणिक कथा सभ नाचए लगलैन- पतिक सेवा, नारी-धर्मक वृतान्त छी तैठाम जँ सुमित्राक जान बकैस देलैन, ई तँ ओइसँ बहुत नीक भेल!

बेटीक बात सुनि वरस्पैत कक्काक मनमे जेना कनी हूबा जगलैन, जेतेक हूबा जगलैन तेतेक मनसूबा सेहो जगलैन। पत्नीकेँ कहलैन-

"बेटी, करवन घर छोड़ि निकलल हएत करवन नहि, तँए पहिने चाह पिआउ। पछाइत खाइ-पीबैक ओरियान करब।"

सुगिया काकी बजली-

"सुमित्रा घरक बेटी छी आकि पाहुन जे अपने ओरियान करब? ओकर घर छिऐ, लिअ अपन घर। खाइ-पीबैले देत तँ देत, नइ देत तँ नइ देत!"

माइक विचार सुनि सुमित्रा बिहुँसए लगली। मुदा बजली किछु ने।

❑ **साभार : बीरांगना**

राक्षसक झड़

दर्जन भरि बच्चाक संग गुरुजी क्लासमे क्लास लइ छला। ऐठाम गरुजी आ शिष्यक चर्च करब, किएक तँ जहिना गुरुजी- अध्यापक, शिक्षक आ मास्टर भेल छैथ तहिना ने विद्यालयो- पाठशाला, स्कूल आ कनभेन्ट सभ बनल अछि। ओना! संस्कृत-मैथिली आ अंगरेजीक शब्द सभ छी मुदा से लोको मानए तरवन ने। तँए, ई सभ शब्द पर्यायवाची भेल। खाएर जे भेल से भेल, ऐठाम विद्यालय, गुरुजी आ शिष्यक प्रयोग करब तँए कोनो शंका मनमे नइ रहए...।

गुरुजी भागवतक कथा पढ़बैत कहै छेलखिन जे भागवत सन अनमोल रत्न जे कि कल्पवृक्ष वा कामधेनु सदृश्य अछि। ई जानकारी तँ गामक बच्चा-बच्चा तककेँ अछि, जँ से नइ अछि तँ कहू जे कोन गाम अवंच अछि जइ गाममे साले-साल वा सालमे दुइयो बेर- तीनियोँ बेर भागवत-कथा व्यासजीक मुहेँ नइ होइए। आ जइ गाममे होइए तइ गाममे सौंसे ग्रामीणकेँ हकार दए नहि सुनाएल जाइए आ विसर्जनक पछाइत भगवत-प्रसाद नहि पबै जाइ छैथ...। गुरुजी भागवत कथाक ओइ अंशमे अंशदान कए रहल छला जइमे मनुख आ मनुखक झड़क चर्च अछि। बिच्चेमे एकटा शिष्य गुरुजीक लगमे आबि अपन हाथक पाँचो आँगूर देखबैत कहलकैन-

"गुरुजी, पाँच मिनट..!"

ओना, गुरुजीक ठेकानपर रहैन जे जखनसँ प्रवचन शुरू केलौं तखनसँ ऐ छौड़ाक पेशावक ई पाँचम खेप छी! मुदा भगवत कथाक बीच पेशावक शिकायत उचित नहि, तँए आदेश दैत गुरुजी बजला-

"राक्षसक झड़ कहीं-के ने..! जेतए जाइ-के छौ जो..!"

बजैक क्रममे तँ गुरुजी भागवत कथाक आवेगमे छला जेना कोनो धारक धाराकेँ होइ छै, तैठाम जँ धारक धाराक बीचमे कोनो बाधा उपस्थित होइए तँ ओइठाम धाराक प्रवाह रूकि केम्हरो उफनए लगैए जइसँ विचारक धारामे बेवधान उपस्थित भइये जाइए सएह गुरुजीकेँ विचारक धारामे भेलैन- 'मनुखक झड़'क जगह 'राक्षसक झड़' कहा गेलैन। जहिना सीकपर राखल वस्तुकेँ उतारिते सीक हिलए-डोलए लगैए तहिना गुरुजीक मन हिलए-डोलए लगलैन। हिलैत-डोलैतकाल सीक जहिना दुनू दिस जाइए तहिना गुरुजीक मन सेहो दुनू दिस भेलैन। एक दिस मनमे उठलैन जे भागवतक कथा सुना रहल छी, जैठाम देवते-राक्षसक चर्च चलि रहल अछि, तैठाम तँ ईहो ने कहए पड़त जे भागवतक कोन खण्डक शब्द 'राक्षसक झड़' छी। किएक तँ दर्जनो भरि शिष्य दर्जन भरि बुधि-विवेकक संग बैसल अछि। केकरा मनमे की उचैड़ रहल छै, से जानब आसान थोड़े अछि..? हेहरू जकाँ गुरुजीक मन मलिन भेलैन मुदा लगले सीके जकाँ डोलैत गुरुजीक विचार ओइ छौड़ापर चलि गेलैन जेकरा कहने छेलखिन। मियादि तरैंग गेलैन। तरैंते बुदबुदेला-

"तड़िपीबा जकाँ ऐ छौड़ाकेँ खुच-खुची धेने छै जे पाँचम बेर ई बाधा उपस्थित केलक! एक बेर तँ उचिते भेल, किएक तँ जागलमे एक-पहर आ सुतलमे दू-पहरपर पेशाव हेबेक चाही। तँए, चारि-पाँच घन्टाक बैसारमे एक-बेर सोभाविक भेल, दुइयो बेर ठीक अछि। किएक तँ जहिना गाइयो-गाइयोक दूध आ महिंसो-महींसक दूध मोट-पातर होइते

अछि तहिना ने लोको-लोकमे होइए। मुदा ऐ छौड़ाकेँ जे तड़िपीबा जकाँ खुचखुची धेने छै, से भरिसक हमर विचार बुझैमे नइ अबै छै तइ दुआरे खुचखुची धेने छै आकि झड़हा धान जकाँ अछि जे कोनो ठेकाने ने छइ!”

सीके जकाँ गुरुजीक मन दोसर दिस हिललैन। हिलते मनमे उठलैन- ‘पेशावक खुचखुची तँ रोग छी!’

रोग मनमे अबिते गुरुजीक विचार हुड़कलैन। हुड़ैकते मन बुदबुदेलैन- ‘रोगो तँ रोग छी! तँए रोग भोग नइ छी सेहो केना कहल जाए? केकरो तन रोग होइ छै, केकरो मन रोग होइ छै आ केकरो धनरोग सेहो होइते छइ..!”

ओना, गुरुजी मने-मन विचारितो छला आ बुदबुदाइतो छला जे शिष्य सभ सेहो देखबो करै छेलैन आ सुनबो करै छेलैन। विषयसँ विषयान्तर भइये रहल छला। जहिना दुनियाँमे रंग-रंगक पानि, रंग-रंगक हवा, रंग-रंगक माटि, रंग-रंगक आगि रहितो ओइ बीचमे रंग-रंगक गाछ-बिरीछ, रंग-रंगक जीव-जन्तु आ रंग-रंगक मनुखकेँ रंग-रंगक बुधि-विवेक नइ रहैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए...। फेर मन घुमलैन। घुमिते अपनापर एलैन। अखन हमहूँ ने गुरुजी छिऐ आ ईहो-सभ ने शिष्य छी। काल्हि दिन हमहूँ शिष्य छेलौं आ काल्हि दिन ओहो सभ गुरुजी हएत। जँ दुनूक बीच तादात्म रहत तँ व्यवधान किए हएत? दुनू गोरे ने बुझितिऐ जे एक-बटिया जैठाम दू-बटियामे आ दू-बटिया जैठाम तीन-बटिया–चरि-बटियामे मिलैए तैठामक मिलन-मोड़पर पेशाव-पैखानाक संग चाह-पान आ खाइ-पीबैक समय सेहो भेटैए..!

गुरुजीक मन फेर घुमलैन। घुमिते मनमे उठलैन- मने ने मनकेँ पकैड़ काबू करत मुदा जेकर देह रोगाह छै ओकरो तँ अपन हिसाब छइहे? फेर मन दोसर दिस छिटकलैन, छिटैकते ओइ छौड़ाक–माने जइ शिष्यपर क्रोध छेलैन ओकर–परिवार दिस नजैर दौड़ गेलैन। नजैर दौड़ते

मनमे उठलैन जे गुरु-आश्रम जेबा-ले माने गुरुक सम्पर्कमे जेबा-ले परिवारक परिवेशो एकटा मूल कारण तँ छिऐ। जँ नइ छिऐ तँ किए जैठाम माने जइ देशमे भिखमंगाक ढवाहि लागल अछि, आन्हर-लुल्हक हिसाबो ने अछि, तैठाम एकटा मेडिकल विद्यार्थी-ले चालीस लाख रूपैआक खर्च केवल मेडिकलक चारि सालक कोर्स-ले अछि, बाँकी बाल-वर्गसँ कौलेज धरिक खर्च छोड़ि कऽ। जैठाम बाल वर्ग सेहो आब लाखक खर्चक भऽ गेल अछि..?

गुरुजीक मन विषसँ विषविषा बिसाइन-बिसाइन हुअ लगलैन। तही बीच एकटा शिष्य पुछि देलकैन-

"गुरुजी! 'मनुखक झड़', 'धानक झड़' आ 'पानक झड़' तँ सुनने छेलौं मुदा 'राक्षकक झड़' नइ सुनने छेलौं, से कनी खोलि कऽ कहियौ।"

शिष्यक प्रश्न सुनि गुरुजीक मन ठमकलैन। ठमैकते निसाँस छुटलैन। निसाँस छुटैक माने ई भेल जे कोनो गम्भीर विषयक बात बुझैमे जखन व्यग्र छी आ तखने जँ कोनो नव प्रश्न सोझामे आबि जाइए तँ ओही गम्भीरतासँ ने ओकरा पकड़ल जाइए। तखन जे गहींरगर साँस चलैए, वएह भेल निसाँस। तइले गुरुजीकेँ अनुकूल परिस्थिति भेटलैन। बजला-

"बौआ, बड़बढ़ियाँ बात पुछलह जे 'राक्षसक झड़ की? मुदा पहिने ई कहि दाए जे 'झड़'क माने की बुझै छहक?"

एकटा शिष्य ठाढ़ होइत बाजल-

"वएह ने 'झड़' भेल गुरुजी, जे समय नहि पकैड़ या तँ समयसँ पहिने झड़ि गेल वा फुलेमे फुलहैर गेल वा फड़लाक पछाइत फले फलहैर गेल..?"

ओना, शिष्यक उत्तर पेब गुरुजीक मनमे तोड़-जोड़ करैक विचार जगलैन मुदा अपन भारपनकेँ सम्हारैत चेतला। जे बच्चा नव-नव रूपमे

दुनियाँकेँ देखै जाइक विचार कऽ रहल अछि, तेकरा जँ सघन बोनक बीच लऽ जा कऽ वौआ दिऐ से उचित नहि।

मुस्की दैत गुरुजी बजला-

“बौआ, महाभारत अछि कि रामायण अछि आकि गीते-भागवत अछि, ओकरा पढ़ै-गुनै मनुख अछि मुदा सुनै-सीखैए राक्षसे-देवताक बात।”

दोसर शिष्य, जेकर बोल टेंटियाहा सुग्गा जकाँ अछि, ओ बिच्चेमे टाँहि देलक-

“गुरुजी, रामायण लिखवैया तुलसी बाबा अपना जिनगीमे हारला कि जीतला से तँ रामायणे कहै छैन, मुदा ‘गृह कारण नाना जंजाला’ कहि जइ दुनियाँकेँ छोड़ि ओ पड़ा गेला ओइ दुनियाँक लोक हुनका की बुझि की कहतैन?”

जेना-जेना शिष्य दिससँ प्रश्न उठैत रहल तेना-तेना गुरुजीक मन सेहो शान्तसँ शान्ताराम होइत, प्रशान्त भऽ गेलैन। तैबीच पहिल शिष्य पुन: अपन दाबा पेश करैत बाजल-

“गुरुजी, हमर प्रश्न तर पड़ि गेल..!”

मुस्की दैत गुरुजी बजला-

“नइ हौ बौआ, जहिना तूँ बुझै छहक जे हमर प्रश्नक नम्बर तर पड़ि रहल अछि तहिना सभ प्रश्नकेँ एला पछाइत जँ एक्केबेर उनटा देबै तखन तरके ने सभसँ ऊपर चलि औत, तइले अन्देशा किए करै छह।”

बिहुसैत शिष्य बाजल-

“गुरुजी, अन्देशा किए हएत! जखन अहूँ जीबै छी आ हमहूँ जीबै छी तखन औझुका जँ आइ नहियोँ हएत तँ काल्हि हएत सएह ने..?”

ओना, गुरुजीक मन वौआए लगलैन। वौआए ई लगलैन जे तेहेन

प्रश्न ई छौड़ा रखि देलक जे महाभारते जकाँ काट-मार हएत। जँ कहबै जे 'बौआ, घरो-परिवारमे आ देशो-दुनियाँमे जे काज अखन नइ सम्भव अछि ओ काल्हि सम्भव हएत, ऐगला पीढ़ी ओकरा नीक जकाँ सम्हारि-सुधारि आरो नीक बना करत... ।'

मुदा लगले उनैट गुरुजीक मनमे एलैन जे जँ ई कहबै- 'बौआ, जिनगीक कोनो ठेकान नहि, तँए जे काल्हि करबह तेकरा आइये करैले कबीर बाबा कहने छैथ..!'

असमंजसमे गुरुजीक मन पड़ि गेलैन। मुदा रच्छ रहलैन जे प्रशान्तचित्त रहने बुलबुला जकाँ मनमे उठलैन- 'उच्च कोटिक विचार तँ वएह ने भेल जे कोनो घटना कि सुघटना आकि दुर्घटनाक विचार जँ घटनेकाल सुझि जाए तँ ओ सुफल घटनाक कारण हएत..!

ओना, रंग-रंगक विचारक बुलबुलो आ शिष्य सबहक सिरजन शक्तियो मिलि गुरुजीक मनकेँ घोर-मट्ठा करैत रहैन। मुदा गुरुजी अपन मुँहक केबाड़क पट्टा तेतेक कसि कऽ मुँहमे लगा लेलैन जे मनक बात मनेमे मुड़िया-मुड़िया मोइनिक पानि जकाँ चकभौर लिअ लगलैन। गुण भेल जे एकटा दोसर छौड़ा बिच्चेमे कौआ जकाँ काँइ-काँइ केलक-

"गुरुजी, बुलनी दादी सदिकाल कहैत रहै छैथ जे 'बौआ, गीता नइ पढ़ियह, बताह भऽ जेबह! घर छोड़ि अनेरे घुड़मुड़िया करए लगबह..!"

जहिना अझकमे कोनो ईंटा वा पाथरक टुकड़ाक चोट माथमे लगिते समुच्चा शरीर झन-झना जाइए तहिना शिष्यक बात सुनिते गुरुजीक सौंसे देह झुनझुना उठलैन। मुदा पाछू उनैट जखन रक्षा कवच दिस आँखि तकला तँ बुझि पड़लैन जे जहिना कियो औगताएलमे किछु धड़फड़ाइत बाजि देलक तहिना ई छोड़ा बाजल अछि। खाएर बाल-बोध अछि, कमसँ कम एते जिज्ञासा तँ भेलै जे अपना गुरुजी लग अपन विचार खुलि कऽ रखलक। जखन विचार रखैक जगह मनमे बनतै तखने ने

विचारशील बनि काल्हि दिन देखत। अखन ओ किआँ-ने गेल जे कौओ एकटा जीव छी आ मनुखो एकटा जीव छी। मुदा दुनूमे अन्तर नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। विवेकशील मनुख अपन जिनगीक जीबैक सभ कलासँ पूर्ण अछि, जे कौआमे नइ छइ। मुदा कार कौआकेँ, जेकरा बोलीकेँ अपशगुन मानि वएह सृष्टिकर्ता ने कागभुशुण्डी सन ज्ञानी-भक्त सेहो सृजन केनहि छैथ..!

विद्यालयक गहमा-गहमीमे कमी आएल। वातावरणमे शान्ति पसरल। सब-सबहक मुँह दिस देखए लगला। माने गुरुजी शिष्य दिस आ शिष्य गुरुजीक मुँह दिस ताकए लागल...।

जहिना अस्त्र-शस्त्रक संग रणभूमिमे रणी अपन रणभूमिक हाक हियाबए लगैए आकि अपन औजारक संग खेतमे पहुँच किसान जहिना खेतक ताक हियाबए लगैए तहिना विद्यालयक वातावरण बनि गेल। एकदम्म शान्त! विद्यालयक शान्त वातावरण बनिते गुरुजीक मन शान्त-सँ-प्रशान्त होइत प्रसन्न हुअ लगलैन। एकाएक बजला-

“बौआ, सभ कियो सुनि लएह! औझुका क्लासक विषयमे तीन मोड़ भऽ गेल अछि। एक मोड़ भेल- हमर-तोहर बीचक माने गुरु-शिष्यक बीचक, दोसर मोड़ भेल- शिष्य-गुरुक बीचक आ तेसर मोड़ भेल- शिष्य-शिष्यक बीचक। माने ई जे किछु प्रश्न एहेन आएल जइसँ स्पष्ट भेल जे ओ शिष्य पढ़ने अछि तँए प्रश्न पुछलक। मुदा ओही क्लासक आन शिष्य पढ़ने अछि कि नहि से केना बुझब?”

अपन प्रश्नकेँ टरैत देख पहिल शिष्य बाजल-

“गुरुजी, जाबे काजक समय अछि, ताबे किछु कऽ लिअ।”

शिष्यक मनमे छेलै जे जँ एको-आधोटा प्रश्नक निमरजना हएत तँ अपन प्रश्नक भइये जाएत। जे गुरुजी बुझि गेला। बजला-

“बौआ, हदियेलासँ काज हरदिआनि भऽ जाइए। तँए! ओ केना

हरिआइन बनत ई तँ पहिनहि विचार करए पड़त किने। ताबे शॉर्ट-कटमे अखन कहि दइ छिअ, नीक जकाँ काल्हि कहबह।"

शिष्य बाजल-

"गुरुजी! भलेँ शॉर्ट-कटेमे किए ने कहिऐ, मुदा बुझै-जोकर तँ कहबे करबै किने?"

गुरुजीक मनमे एलैन, ई छौड़ा बड़ लगराह अछि! जान नइ छोड़त! बजला-

"बौआ, आइ एतबे बुझह जे जे कलमी आम जकाँ गुदगरो आ रसगरो धारक खेबैया अछि ओ भेल राक्षस आ जे से नइ अछि आ अनेरे बाट-घाट छेकि बाधा पहुँचा बाधित करैए ओ भेल राक्षसक झड़, जे समैयक चरौर करैए।"

❑ **साभार : दोहरी हाक**

सद्विचार

एकटा न्यायप्रिय राजा साधुक भेषमे अपन प्रजाक कुशल-क्षेम बुझैले निकललैथ। जहिया कहियो ओ राजा साधुक भेषमे निकलैथ तहिया खाली एकटा मंत्रीकेँ चेला रूपमे संग कऽ लैथ। ने अंगरक्षक रहैन आ ने अमिला-फमिला आ ने केकरो जानकारी देथिन।

बहुतो गोरेसँ सम्पर्क करैत राजा एकटा बगीचामे पहुँचला। ओइ बगीचामे एकटा वृद्ध किसान नवका -बच्चा- गाछ रोपैत रहैथ। गाछ देख राजा किसानकेँ पुछलखिन-

"ई तँ अखरोटक गाछ बुझि पड़ैए?"

मुस्कियाइत किसान कहलकैन-

"हँ भैया, अहाँक अनुमान सोलहन्नी जाइज अछि।"

"बीस-पच्चीस बर्खक गाछ भेलापर अखरोट फड़ै छै, ताधैर अहाँ जीविते रहब?"

"ऐ बगीचाकेँ हमर बाप-दादा लगौने छैथ। खून-पसीना एकबट्ट कऽ एकरा पटौलैन, देखभाल केलैन। जेकर फड़ हम सभ खाइ छी। तँए आब हमरो कर्तव्य बनैए जे ओते हमहूँ रोपि दिऐ। अपनेटा-ले गाछ लगौनाइ तँ स्वार्थक बात भऽ जाइ छइ। हम ई नै सोचै छी जे आइ ऐ

गाछक उपयोगिता कि छइ? भविसमे दोसरकेँ फल दइ बस यएह इच्छा अछि।”

किसानक विचार सुनि राजा मंत्रीकेँ कहलखिन-

“जौं अहिना सभ बुझए लगै जे हमरा लगबैसँ मतलब अछि तँ समाजो आ परिवारोमे सद्-विचार पसैर जाएत। जाधैर समाजमे सद्-वृत्तिक प्रसार नै हएत ताधैर नीक समाज बनब मात्र कल्पना रहत।”

❑ **साभार : तरेगन**

पोखरिक सैरात

मार्च मासक तेसर सप्ताह। अनुमण्डल कार्यालयक ऑफिस जा गामक पोखैरक सैरातक सम्बन्धमे रमानन्द आवेदन दैत बाजल–

"एते दिन जइ ढंगे भेल, भेल। मुदा आगूक बिनु विचार केने नै होइ?"

एक तँ ओहिना सरकारियो कार्यालय आ बैंको अदहा मार्चक पछाइत बेसी व्यस्त भइये जाइए। व्यस्ततो केना नै हएत, सरकारी मासक आखिरी मास छी, साल भरिक काजक लेखो-जोखा होइए आ ऐगला सालक काजोमे हाथ लगबे करैए। ऑफिसक भीड़ दुआरे आलमारीमे आवेदन रखि, ऑफिससँ आश्वासन भेटल–

"देखल जेतइ।"

ऑफिससँ निकैल रमानन्द अपन संगी सबहक संग आगूक परतीपर बैस विचार-विमर्श करैक बैसार केलक। ओना, मार्च रहने गामो-गामक आ सरकारियो काजसँ जुड़ल लोकक भीड़ रहबे करइ। बैसार केकरो हौइ मुदा सार्वजनिक जगहक तँ अपन महत छै, तैसंग ईहो छै जे केकरो बजैक आकि सुनैक अधिकार तँ भइये जाइ छइ। आनक ओइ बैसारमे, सभकेँ सुनै आकि बजैक अधिकार नै होइ छै जे तरपेसकी

रहल। मुदा ई तँ सार्वजनिक जगहक बैसार छी तँए सभकेँ अधिकार छइ। ओना, गामसँ रमानन्द पाँचे गोरे, पाँचो शिक्षित बेरोजगार विचारि कऽ पोखैरक सैरातक विरोध करैले पहुँचल छल मुदा एक्के-दुइए आनो-आन ब्लौकक आ आनो-आन गामक एक-डेढ़ साए लोक बैसारमे बैस गेल।

अदौसँ मिथिलांचलमे पोखैर-इनार जनमैत रहल आ कोसी, कमलाक बाढ़िक कटनियाँमे मरितो रहले अछि। शुरुहेसँ लोकक बीच ई धारना बनले अछि जे पोखैर-इनार धर्मकृत भेने दसनामा होइ छइ। भलेँ बेक्तिगते किए ने होइ, मुदा तइमे बेवधानो कम नै भेल। पोखैर-इनार धर्मकृत होइतो अधर्मक रूपमे उपयोग सेहो होइते आएल अछि। अधर्म ई जे मुँह-दुब्बर सभकेँ पानिक उपयोगसँ रोकल गेल। मुदा मनुखो तँ मनुख छी। कठजीव तँ होइते अछि। केतबो छीना-झपटी हौउ आकि महामारी, तैयो मरलो-हरला पछाइत पोनैगिये जाइए। दुनियाँ रहत तँ मनुखो रहबे करत आ मनुख रहत तँ देवा-देवीसँ भूतो-प्रेत रहबे करत।

पैछला सात दिनसँ, जहियासँ सैरातक सूचना भेल, गहमा-गहमी हुअ लगल। अनुमण्डलक जेते पोखैर अछि ओकर बन्दोवस्ती हएत। ओना, सभ पोखैर सार्वजनिक नहियेँ अछि मुदा किछु तँ ऐछे। तेकर कारण अछि जे जमीन्दारी टुटला पछाइत जे पोखैर नीलाम भेल सेहो आ जे जमीन्दारक माध्यमसँ वा राजक आदेशसँ खुनौल गेल सेहो, सोलहन्नी तँ नहियेँ मुदा अदहा-छिदहा तँ सरकारी सैरात भेबे कएल। तँए अनुमण्डलक सभ पोखैरक बन्दोबस्त नहियेँ होइ छल मुदा जे सरकारी अधिकारमे अछि ओ तँ होइते आबि रहल अछि। एक तँ ओहुना रौदी-दाहीक प्रभाव पोखैर-इनारमे बेसी होइते अछि, तँए बिसवासू उपजा होइ से तँ नहियेँ छल मुदा तैयो थोड़-थाड़ तँ ऐछे।

जखन पोखैरक दुरबेवहार हुअ लगल तखन आम-जनक बीच आक्रोश बढ़ल, जइसँ गामे-गाम विवाद ठाढ़ भेल, जेकर परिणाम भेल जे

किछु विवादित पोखैर सरकारी भेल। ओना, गाम-गामक सभ पोखैर सरकारी नहियेँ भेल मुदा पोखैरबला जे दुरबेवहार करै छल से कमल। कमल ई जे अकसरहाँ परिवार अपन पानिक ओरियान कल गड़ा कऽ लेलक। मुदा समस्या तैयो रहबे कएल। जखन कि चारि-सँ-आठअना परिवारमे पानिक ओरियान अपनो कल गड़ौने आ किछु सरकारियो माध्यमसँ भेल तथापि समस्या तँ ऐछे।

ओना, अनुमण्डलक अदहासँ बेसी गामक पोखैर मरने भऽ गेल। मरना ई भेल जे जहिना कोसीक तहिना कमला धारक कटनियासँ भोथाएल। गामसँ पोखैर हेरा गेल। पोखैरे नै, इनारो हेरा गेल। ओना, इनार हराइक दोसरो कारण भेल। भेल ई जे इनारसँ पानि तँ दुनू हाथे खींच कऽ ऊपर अनैए पड़ै छै जइमे बेसी भीड़ो होइ छै आ डोल-उगहैनक खगता सेहो पड़ै छै, जेकरा कलक हेण्डिल असान बना देलक। मुदा पानि ऊपर अनैमे जहिना असान भेल तहिना कुम्हारक रोजगार सेहो खेलक। ओना, कुम्हारो सभ घैलक बदला डाबा-डुबी बनैबते अछि। नै बनौत तँ जुड़शीतलमे दान कथी लोक करत। अशुद्ध प्लाष्टिकक बाल्टी करत केना, आ स्टीलक महगे छइ। ताम-पीत्तैरक जे करत से ओ आब गाममे अछि आकि पड़ा कऽ बजार चलि गेल।

गाम-गाममे कोसी-कमलाक बाउलक भरैन भेने पोखैर-इनार गेल। तेतबे नै! ओना, पोखैरक बदला धार आएल, मुदा गामक माटि तोपेने, उपजाउ भूमि बाउलसँ भरने, गामक सेखीए बदैल देलक। सोलहन्नी तँ नै कहल जा सकैए मुदा चौअन्नी, अठन्नी केतौ-केतौ सोलहन्नियोँ अन-पानि विहीन गाम भऽ गेल। एक गामक कोन बात जे धारक पेटमे पड़ि हजारो गाम बाउल-पानिक तरमे दबा गेल।

उपजाक माटि बलुआएल, पानिक पोखैर-इनार गेल आ गाछी-बिरछी, खढ़-खरहोरि सेहो सभ चलि गेल। मुदा जाइक माने ई नै जे उड़ि कऽ मेघमे चलि गेल आकि समुद्रमे डुमि गेल, से नै भेल। जहिना दिन

घटलापर मुँह-दुबरा बहु मुँह-गरहाक भौजाइ बनि घरसँ पड़ा जाइ छै तहिना मिथिलांचलक किछु माटियोक संग भेल। तैसंग गाम-गाममे रहनिहारक जमीन आ बहरबैया जमीनबलाक बीच हिस्सा–बखराक झंझट सेहो लधाइत रहल। सिकमी, बकास्त, मनखप इत्यादि ढेर रंगक ओझरी गाममे पसरल। पसरबो केना नै करैत एकठाम जँ दू बीघा जमीनक अड़ियाएल टुकड़ी अछि, तँ ओइमे एक बीघाक टुकड़ीक मालगुजारी बीस रूपैआ अछि तहीठाम दोसर टुकड़ी- शिवोत्तर, ब्रह्मोत्तर इत्यादि- मालगुजारी विहीन अछि। माने ओकरा चारि-आठअना रसीदक छपाइ भरि मात्र लगै छइ। जेकरा शेष कहल जाइ छइ।

गामक माटिक ओझरी बढ़ैत-बढ़ैत पानियोंं दिस बढ़ल। धार-धुरक घटवारि बढ़ल, मुदा एके धारक घटवारि एक रंग नै रहल। खुशीक बात ईहो रहल जे धार-धुरक घटवारि बहरबैयाकेँ सेहो हाथ लगल। मन माफित लूट मचौलक। इज्जत-आबरू बेठेकान भऽ गेल। संग-संग काछु-माछक ओझरी सेहो लगल। जइसँ पानिक ओझरी बढ़ल। किछु घाटक सरकारीकरण भेल आ किछु रहिये गेल। माने ई जे एके गामक पानि बँटा गेल। किछु दसनामा भेल किछु खुदनामा। खुदनामा ई जे पोखैर खुनैमे जे खर्च देलिऐ...। खाएर! जे भेल। फेर दोसर मोड़ लेलक, मोड़ ई लेलक जे गाम-गामक दसनामा पोखैरक सोसाइटी बनि गेल जे मछुआ सोसाइटी कहबैए। जे खास जातिक हाथ चलि गेल मुदा ओझरियो बढ़िते गेल। सोसाइटी भेने गामक पानिक हकदार अनगौंआँ भऽ गेल।

गामक पढ़ल-लिखल बेरोजगार दूधक संग दारूक कारोबार कऽ अपन बेरोजगारी भगबए चाहैए। गामक पानिक सदुपयोगक कोनो बेवस्था नहि। पानिक की मोल जिनगीक लेल अछि ओ ढोलक-हरिमुनियाँक सुरे-तान धरि अछि। गाम-गामक चर-चाँचर आ मुइल धार सौंसे इलाका पसरल अछि मुदा उपजा लेल पानि नै! यएह सोचि रमानन्द शारदानन्द, राम विलास, सिंहेश्वर आ जगरनाथ कार्यालयमे आवेदन देबए

आएल। ओइमे एकेटा मांग छै–

"गामक पानि किसान हाथ आ गामक रोजगार बेरोजगार हाथ।"

❑ **साभार : अप्पन-बीरान**

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर

एगच्छा आमक गाछ

प्रीगर शत्रु

दहेजुआ गाए

गठूलाक गारि

गण्डा

अब-तब

झूठे

उजगी

जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू

नोकरिहारा

अनका बेर ओंघी

लगबे ने कएल

ओ दिन

पान पराग

फोंक मकड़

झकास

ठोररंगू

हकार

ओझरी

दोती बिआह

कचहरिया रोग

नटकिया गति

भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल

पछताबा

परिवारक प्रतिष्ठा

पागलखाना

खाए चाहैए

गामे उपैट गेल

खतियाएल घर

किछु ने फुरैए

तिलकोरक तरुआ

पटोर

बेटाक चलैत

उग्रघारा

बेटीक कुभेला

दोहरी हाक

खिलतोड़

बापक चलैत

गाम बिसैर गेल

ठकहरबा

समैयक बेरबादी

न्याय चाही

रिजल्ट

बाल बोध

अपन गारि अपन दुआरि

सरही सौबजा

अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध

कन्हा भँट्टा

फलहार

गावीस मोइस

निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा

मानसरोवर यात्रा

गामक शकल-सूरत

मितक प्रयोजन

चैन-बेचैन

पाइक इज्जत

माघक घूर : 1

मधुमाछी

मति-गति

नैहराक धाड़

माघक घूर : 2

चहकल विचार

राक्षसक झड़

सद्विचार

पोखरिक सैरात

मनकमना

कटौज

किछु ने

हथियाएल खुरपी

झुटका विदाइ

खुदियाएल

गलती अपने भेल

बत्तु

असिरवाद उलैट गेल

उड़हैड़

जिगेसा
लेहाज
जानक मोल
समर्पण
स्तब्ध

भोरक झगड़ा
शालीनता
पान
पवनक विवेक
हरवाहि

समरथाइक भूत
समता
सुखाएल सूरत
खजाना
मौसी

कर्ज : 2
टुटल मनक जुटान
ऐँठ साड़ी
अस्तित्वक समाप्ति
जाति नहि पानि

विदाइ
कर्तव्यपरायन सुगा
निशाँ
दान-दैछना
माइक वचन

मथाहाथ
पाइक मोल
गंजन
नमहर फेरा
अपन काज

बेटपन
उमेद
एकोटा ने
कथनी नै करनी
मुसाइ पण्डित

घरवास
भूल
बत्तीसोअना
पुरनी भौजी
अर्द्धांगिनी

पेटगनाह
गंगा नहेलौं
बकठाँइ
गुलेती दास
खर्च

डॉक्टर हेमन्त
मनुखक मूल्य
तीन जुगिया भाय
आश्रम नहि सोभाव बदली
मायराम

शुभचिन्तक
विधवा बिआह
वैष्णवी भगवती
प्रेमी
शंका

मुइलो बिसेबैन
प्रतिभा
केतौ नै
हमर कोन दोख
असगरे

डीहक बटबारा
मूलधन
छूआ
लफ साग
नहरकन्हा

अपन सन मुँह
पाप आ पुण्य
चोरक चोरबती
मातृभूमि
कटा-कटी

हरदीक हरदा
बेरपर
झगड़ाउ-झोटैला
फॉगु
बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर
पतझाड़
धरम काँट
तिलासंक्रान्तिक लाइ
कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भोँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकैँ फुसलबै छी

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्रूताक मद

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद

अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

दूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी
सुभद्रा
देखल दिन : 1
पड़ाइन
चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी
भोलानाथ बाबा
घटक बाबा
इजोरिया राति
भँसैत नाह

शम्भुदास
शिवजीक डाक-बाक्
सजाए
छुटि गेल
कनफुसकी

फाँसी
गति-मुक्ति
बजन्ता-बुझन्ता
अप्पन हारि
कोसलिया

मुसहैन
बिसाँढ़
मत्हानि
तेरहो करम
बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख
गैत-वीध
बेवहारिक
ठका गेलौं
साए कच्छे

करिछौन लाली
बलजोर
गति-गुद्दा
कलम हानि कऽ
अकाल

भैंटक लावा
डंका
काल्हि दिन
इमानदार घूसखोर
सनेस : 1

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50

9 789388 421683

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452